International Journal of Geology, Agriculture and Environmental Sciences
Volume – 3 Special Issue, January - December 2015
Website: www.woarjournals.org/IJGAES *ISSN: 2348-0254*

भोपालगढ़ (खेतड़ी) के प्रमुख दर्शनीय स्थलो का ऐतिहासिक एवं भौगोलिक अध्ययन

Dr. Mukesh Kumar Sharma
Principal,
Bloom College, Chirawa, Jhunjhunu
Dr. Babita
Assistant Professor,
Maharani Girls PG College, Rampura, Alsisar, Jhunjhunu

परिचय :

खेतड़ी राजस्थान के झुन्झुनू जिले मे सिघांना व पपुरना ग्राम के बीच स्थित हैं। यह भारत में ही नही' बल्कि दुनियॉ भर में अपना ढंका बजाए रखने वाली तांब्र नगरी से पहचानी जाती थी और आज भी पहचानी जाती है। खेतड़ी के महाराज श्री अजीत सिंह के शासन काल में प्रसिद्धि प्राप्त की। दिल्ली से जयपुर जाने वाली स्टेट हाईवे नं. 13 इसके बीचो–बीच में से गुजरती है तथा इस मार्ग के माध्यम से यातयात के साधनो के द्वारा यहॉ सुगमता से पहुंचा जा सकता है।

महाराज अजीत सिंह जी जिस किले (गढ़) में निवास किया करते थे। उस किले का नाम भोपालगढ़ है। भोपालगढ़ का निर्माण सन् 1754 ई. मे वीरवर भोपाल सिंह जी के द्वारा किया गया हैं आज यह लगभग 262 वर्ष पूरे कर चुका है तथा इसकी ऊचाई समुद्र तल से 2337 फुट है तथा यह लगभग 3 वर्ग कि.मी. के क्षेत्र में फैला हुआ हैं। भोपालगढ़ राजस्थान के शेखावाटी क्षेत्र मे उपस्थित किलो व महलो में अद्वितीय है। यह उन किलो में से एक जो अपने गौरव, वैभवता और विशालता को अपने अन्दर समाएं हुए है।

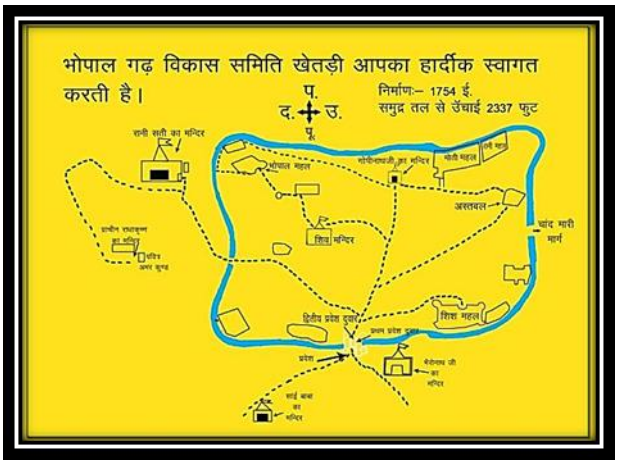

भोपालगढ़ के निम्न स्थानो के दर्शन :

भोपालगढ़ के दर्शन इस के नक्शे के द्वारा किया जा सकता है।

- अत्यन्त महत्वपूर्ण शीशमहल।
- मोती महल।
- रानी महल।
- भोपाल महल।
- गोपीनाथ जी का मन्दिर।
- शिवमन्दिर।
- रानी सती जी का मन्दिर।
- विशाल पहाडो के बीच मे स्थित पवित्र अमर कुण्ड या (गौ मुख)।

भोपालगढ़ :

खेतड़ी में भोपालगढ़ पर जाने के दो रास्ते है। पहला प्राचीन मार्ग जो मुख्य बाजार से होते हुए अनाज मण्ड़ी मे से हो कर गुजरता है। जिसका उपयोग प्राचीन समय में घोडो व खचरो के द्वारा किले तक सम्पूर्ण सामग्री पहुचाने

के काम में लिया जाता था। किन्तु अब इस मार्ग का उपयोग बहुत कम हो गया तथा दूसरा नवीन मार्ग है जो अजीत सिंह हॉस्पीटल खेतड़ी के पास से हो कर जाता है।

इस मार्ग का उपयोग वर्तमान समय में अधिक हो रहा है जिसकी लम्बाई महज 2 कि.मी. है और रास्ते के बीच में बाबा सांई का भव्य मन्दिर मिलता है। भोपालगढ़ के रास्ते की दूरी तय करने पर किले के अन्दर जाने का रास्ता नजर आ जाता है। किले की सीमा के अन्दर प्रवेश होने पर पहला मुख्य प्रवेश द्वार नजर आता है। जो बहुत विशाल हैं तथा इसके दरवाजे की बनावट देखने लायक है।

फिर इसके तुरन्त बाद दूसरा प्रवेश द्वार नजर आता है। इसकी भी शोभा देखते ही बनती है। इस प्रवेश द्वार के दोनो और दो मंजिलो बरामदे हैं। इसके सबसे ऊपर वाले हिस्से पर जाने के बाद यदि पूर्व से उत्रर दिशा की तरफ देखने पर सम्पूर्ण खेतड़ी को देखा जा सकता है इसके अलावा कॉपर, सिंघाना, अन्य गाँवो को देख सकते है। दूसरे प्रवेश द्वार से गुजरने के बाद एक बरगद के वृक्ष के पास भोपालगढ़ के नक्शे के बोर्ड व पानी की टंकी मौजूद है।

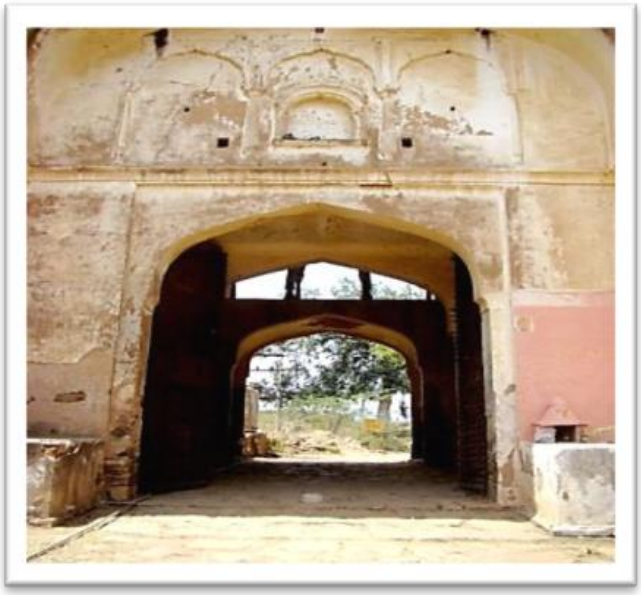

यहॉ से वह मार्ग शुरू होता है जिसके माध्यम से इस किले के अत्यन्त महत्वपूर्ण शीश महल, रानी महल, भोपाल महल, गोपीनाथ जी का मन्दिर, शिव मन्दिर व किले के बाहर रानी सती जी का मन्दिर, तथा विशाल पहाडो के बीच मे स्थापित पवित्र अमर कुण्ड (गौ मुख) आदि के दर्शन सुलभ है।

अत्यन्त महत्वपूर्ण राज महल(शीश महल):

भोपाल किले के हिस्से का जो सबसे अत्यन्त महत्वपूर्ण महल माना गया!वो है राजमहल तथा राज महल को शीश महल के नाम से भी प्रसिद्धी प्राप्त है। इस महल को दो प्रमुख भागो में बाट रखा है। पहला राज महल और दूसरा रनिवास। राज महल में राजा अजीत सिंह जी के द्वारा दरबार हॉल में सभाओं का आयोजन किया जाता था। वहाँ राजा जी के सभी मुख्य पदाधिकारी,अधिकारी,कर्मचारी व अन्य लोग सभा में सम्मिलित हुआ करते थे। तथा यही से राजकार्यो को सम्पन किया करते थे। इन सभाओ के अन्दर राजा जी के साथ उनकी महारानी श्रीमती चम्पावती जी भी उपस्थित रहती थी।

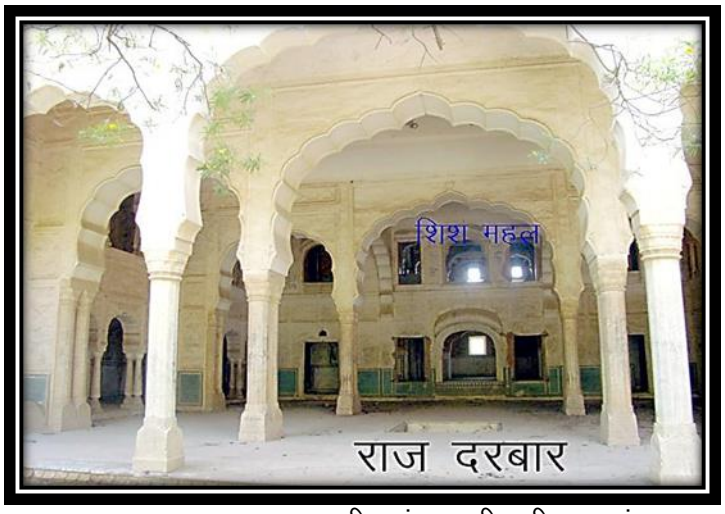

लेकिन उनके बैठने का विशेष स्थान जो महल के दूसरे माले में व्यवस्थित किया गया था। जिसे शीशमहल के नाम से आज सभी जानते है। राज महल के इस कमरे को राजा ने जयपुर के कारीगरो के द्वारा कांच के टुकडो से इस तरह सजवाया कि जिसे देखने पर आज भी वर्णन करना असम्भव सा लगता है। इस कमरे में रात्रि के समय यदि एक दीपक भी जला दिया जाता तो सम्पूर्ण महल में रोशनी छा जाती थी ओर आज भी यदि महल के कमरे मे माचिस की एक तिल्ली जलाकर देखा जाए तो मानो ऐसा महसूस होता है कि कमरे मे आग जल रही हो।

शीशमहल की ये प्रमुख विशेषता है' इसके अलावा इसी महल की दिवारो के ऊपरी किनारो पर राजा जी के बहादुरो के साथ–साथ, हाथी, घोड़े, रथ व पैदल सिपाहियो के तथा सामने की दीवार पर रानी जी के श्रृगांर करते हुए राजा जी के श्रृगांर के पष्चात् का भी सुन्दर चित्र अकिंत करवाये थे। जो आज भी इन दिवारो पर है। राज दरबार के सामने ही दूसरा महल रनिवास है जिसका उपयोग महारानी व उन की दासियां स्नान व क्रीडाएं करती थी। यहां एक कुंआ भी उपलब्ध हुआ। रनिवास के एक कक्ष में श्री राधाकृष्ण के साथ गोपीयो के रासलीला करते हुए चित्र अकिंत कराए गए थे। जो आज भी वहां पर हैं उस कक्ष में प्रवेश करने पर वह नीले रंग का दिखाई देता हैं। रनिवास महल से राज महल मे प्रवेश करने के लिए ऊपर एक लम्बी सकरी गली भी बनवाई गई थी जिसके माध्यम से महारानी जी आराम से अपने शीशमहल मे बिना नीचे आये आ जा सकती थी। लेकिन आज इस महल में भी छिपे धन की तलाश में लोग बुरी तरह जहाँ–तहाँ और दिवारों में भी खुदाई कर चुके हैं सभी किलों–स्मारकों पर वहाँ पहले आने–जाने वाले लोगों ने अपने नाम–पते तथा मोबाइल नं. लिख दिए हैं कुछ अष्लील बातें एवं चित्र भी अकिंत है।

मोती महल :

भोपाल किले के दूसरे प्रवेश द्ववार पर जैसे ही पहुॅचेगे। तो वहॉ से पष्चिम–उत्र दिशा की ओर देखने पर मोतीमहल नजर आता है। इस महल की सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि राजा श्री अजीत सिंह जी के पूर्व जो का राजतिलक तथा बाद में उनके वंश जो का राजतिलक इसी महल मे किया गया था। महाराज का भी राजतिलक यही पर हुआ तथा खेतड़ी कि राजगद्दी पर बैठकर यहां से राज कार्य शुरू किया जनश्रुति है कि वह राजगद्दी आज भी यहां पर मौजूद है। इस राजगद्दी के नीचे कि जगह हमेशा साफ रहती थी किसी बच्चे या व्यक्ति को एक दिन छोड कर एक दिन बुखार आता था तो उसे इस जगह पर लिटाने से वह बुखार खत्म हो जाता था ओर आज भी यदि ऐसे व्यक्ति उस जगह लिटाया जाए तो वह ठीक हो सकता हैं।

इस महल को उस समय राजा जी के द्वारा इतने सुन्दर तरीके से सजाया जाता था जिसकी कल्पना करना भी असम्भव है और इस महल के नीचे ओर दक्षिण दिशा मे भुल–भुल्इया स्थित है तथा महल के नीचे अन्दर कि तरफ गुप्त सुरंगे मौजूद है। ये सुरंगे इतनी ऊची व चौड़ी है जिसमे सैनिक घोड़े पर बैठकर किले से बाहर आ जा सकते है तथा इनका उपयोग बाहरी आक्रमण के समय

राजा व उनके सिपाही इन सुरंगो के द्वारा किले से बाहर आकर शत्रुओ को पीछे से घेराकर बन्दी बना लेते व आवश्यकता पडने पर आक्रमण भी कर देते थे।

इन के अलावा इन सुरंगो मे जगह –जगह पर कमरे भी बने हुए है जिनमे से कुछ कमरो में ऊटो की खाल के अन्दर देशी घी, तेल, भोज्य साम्रगी व कुछ कमरो मे घास–फुस से भरे रहते थे तो कुछ नमक से भरे हुए रहते थे। जिनका उपयोग सैनिक किया करते थे। लेकिन आज इस महल में भी छिपे धन की तलाश में लोग बुरी तरह जहाँ–तहाँ और दिवारों में भी खुदाई कर चुके हैं साथ ही प्रकृति की मार झेलते–झेलते यह महल खण्डहर के रूप में बदलता जा रहा है। सभी किलों–स्मारकों पर वहाँ पहले आने–जाने वाले लोगों ने अपने नाम–पते तथा मोबाइल नं. लिख दिए हैं कुछ अष्लील बातें एवं चित्र भी अकिंत है।

रानी महल :

मोती महल के पास ही मौजूद है रानी महल। इस महल मे राजा जी कि महारानी श्रीमती चम्पावती जी व उन की दासियां रहती थी इसलिए इस महल का नाम रानी महल रखा गया था। राजा साहब जब भी कोई कार्यक्रम करते तो रानी साहीबा जी को सदेंश पहुंचाया जाता तब वह रानी महल से राज महल या मोती महल मे आती थी ओर कार्यक्रम मे भाग लेती थी।

भोपाल महल :

भोपाल महल भोपाल किले के दक्षिण–पष्चिम दिशा मे बना हुआ है। इसका निर्माण श्री भोपाल सिंह जी के द्वारा करवाया गया था। जो ज्यादा बड़ा नही है इसमे दो से तीन कमरे है। लेकिन इसी महल के वजह से खेतड़ी व भोपालगढ़ का शुभ आरम्भ हुआ। इतिहाकारो व बुर्जुगो के द्वारा सुना गया है। और शायद बहुत कम लोगो को ये मालूम कि भोपाल सिंह जी झुन्झुनू से जसरापुर के ठाकुर अमर सिंह जी के यहां उनकी बेटी कि शादी मे आये थे। तब भोपाल सिंह को जसरापुर से 3 कोस दूरी पर स्थित का पहाड़ी क्षेत्र अपने घोड़े चराने के लिए पसंद आया और वह क्षेत्र खेतसिंह जी का था। जिसका नाम खेतसिंह की ढ़ाणी था। जो कि ठाकुर जी के जाति भाई थे ये बात भोपाल जी ने ठाकुर जी से कही और ठाकुर के कहने पर खेतसिंह जी ने भोपाल जी को घोड़े चरवाने की अनुमति मिल गई। किन्तु भोपाल सिंह जी ने धीरे–धीरे यहां पर कब्जा कर लिया। पहाड पर एक छोटी बुर्ज बनाई तत्पष्चात सम्वत् 1812 विक्रमी में खेतसिंह की ढ़ाणी के स्थान पर खेतड़ी शहर बसाना आरम्भ किया। अपने नाम से भोपाल महल ओर भोपाल किला बनवाया था। सन् 1756 मे खेतड़ी को राजधानी बनाया था।

गोपीनाथ जी का मन्दिर :

गोपीनाथ जी के इस मन्दिर मे बहुत ही प्राचीन राधाकृष्ण जी कि सुन्दर मुर्तियां स्थापित हैं। ये मन्दिर मोती महल के दक्षिण दिशा की ओर स्थित है। इसमे महाराज व रानी साहीबा जी दोनो प्रतिदिन राधाकृष्ण जी पूजाकर दिन की शुरूआत किया करते थे। तब से लेकर आज तक यहां पर पूजा–अर्चना होती आ रही हैं तथा पिछले 34 वर्षो से यहा पर श्री मोहनदास जी नाम के साधु निवास कर मन्दिर मे पूजा करते आ रहे है उन्ही के कारण इस मन्दिर को भव्य स्वरूप प्रदान हुआ है।

तथा आज इस मन्दिर का अपना अतिथि निवास गृह, गौ शाला व वाहनो के लिए पार्किग स्थल बना हुआ है। आज खेतड़ी का हर निवासी इनके कारण भोपालगढ़ के इस मन्दिर मे आ पहुँचते है ओर प्रत्येक वर्ष में दो या तीन बार यहां उत्सव–समारोह आयोजित किये जाते हैं। जिसमे दूर–दूर से साधु–संन्यासी, आम नागरिक यहां पहुंच कर उत्सव–समारोह मे भाग लेते है। सुना जाता है कि इस मन्दिर मे आने वाले सभी व्यक्तियों की सारी मनोकामनायें पूरी हो जाती हैं।

शिवमन्दिर :

भोपाल किले के मध्य में शिवमन्दिर स्थित है। यह शिवमन्दिर राजा श्री अभय सिंह जी के समय से ही बना हुआ है। क्यो कि राजा अभय सिंह जी की यह इच्छा थी कि इस शिवलिगं का जल मेरी मृत्यु के बाद मेरे शरीर के ऊपर से गुजरे। कुछ समय बाद उनका सन् 1825 में देहान्त हो गया। फिर उनके पुत्र बख्तावर सिंह जी ने इनकी समाधि इसी मन्दिर मे शिव जी के उत्रर दिशा कि तरफ बनवायी गई जो आज भी वहां पर मौजूद है। शिव जी के ठीक सामने दुर्गा माता जी कि प्रतिमा स्थित है। आज जो भी व्यक्ति वहां शिवकी पूजा के दौरान जल चढ़ता है तो वह जल बहता हुआ अभय सिंह जी कि समाधि पर से ही होकर गुजरता हैं। सुना जाता है कि इस मन्दिर मे धूर्त व्यक्ति चाहे तो भी यहां अधिक समय तक नही रूक पाता है। यहां कि यह एक विशेष बात है।

इसी मन्दिर के दक्षिण दिशा मे एक कुआ बना हैं जिसमे से जल लाकर यहां पूजा किया करते है।

रानी सती जी का मन्दिर :

रानी सती जी का मन्दिर किले के बाहर दक्षिण दिशा मे बना हुआ जिसका रास्ता किले के अन्दर से होकर गुजरता है। भोपाल किले के दुसरे प्रवेश द्वार के पास से दक्षिण दिशा मे ही कच्चा रास्ता गुजरता हैं। जो की किले की सीमा से बाहर कि तरफ निकलते हुए इस मन्दिर तक पहुंचता है। इस मन्दिर के ऊपर सुन्दर भव्य छत्री बनी हुई हैं। ओर इस छत्री मे दरवाजे के ऊपर यह लिखा हुआ है। कि यह मन्दिर राजा शिवनाथ सिंह जी खेतड़ी नरेश जी ने अपने पिता राजा बहादुर बख्तावर सिंह जी की याद मे बनवाया गया।

राजा अभय सिंह जी के पुत्र बख्तावर जी के युवा होने पर उनका विवाह मेवाड़ के प्रतिष्ठित ठिकाने सलूंबर के महाराज श्री सरदारसिंह जी की पुत्री चूडावत के साथ हुआ था। तथा पिताजी की मृत्यु के तीन साल बाद ही सन् 1828 को परलोकगामी हो गए। यह बात जैसे ही रानी श्रीमति चूडावत जी को मालुम हुई वे अपने पति का अनुगमन करने को उसी घोड़े पर आरूढ़ होकर चली जिस पर वे अपने पतिदेव के साथ पितृ गृह से आयी थी। तथा रानी जी सती होने से पहले गढ़ के दूसरे प्रवेश द्वार पर अपने मेंहदी मे सने हुए हाथ की छाप लगाई थी। जो अब तक पूजी जाती है लेकिन अब रानी जी की उस छाप पर सिन्दुर लगा हुआ है। जहां पर रानी चूडावत जी अपने पति बख्तावर सिंह जी के साथ सती हुई वही पर ये मन्दिर बनाया गया था। जिनकी पूजा तब से लेकर आज तक स्त्री व पुरूष सभी बडी श्रद्धा से करते हुए आ रहे है। यहां के लोगो का यह माना है यदि कोई व्यक्ति यहां रोजना रामायण, गीता के पाठ करने से मनोकामना पूरी हो जाती हैं तथा शारीरिक कष्ट भी दूर होते है। इस मन्दिर की ऊपरी छत पर जा कर दक्षिण की तरफ में देखने पर उसे बागौर नाम का एक छोटा सा गांव दिखाई देता हैं।

विशाल पहाडो के बीच मे स्थित पवित्र अमर कुण्ड (गौ मुख) :

भोपालगढ़ का यह सबसे पवित्र स्थान है जिसे अमर कुण्ड के नाम से जाना जाता है तथा इसे गौ मुख भी कहा कहते है। यह किले के बाहर दक्षिण दिशा मे स्थित है जिसका रास्ता किले के अन्दर से होकर गुजरता है। भोपाल किले के दूसरे प्रवेश द्वार के पास से दक्षिण दिशा मे ही कच्चा रास्ता गुजरता हैं। जो की किले की सीमा से बाहर कि तरफ निकलते हुए रानी सती के मन्दिर के पास होता हुआ यहां तक पहुंचता है। यह प्राकृतिक रूप से विशाल पहाड़ो नीचले भाग मे बना है यहां के लोगो कि इस घटना की याद के आधार पर यह पता चला की इस अमर कुण्ड का निर्माण एक तपस्वी साधु के द्वारा बागौर के ग्रामीणो की प्रार्थना करने पर साधु ने अपने चीमटे से पहाड की नीचे के भाग मे वार करने पर यहा जल प्रवाह शुरू हुआ। फिर उन लोगो ने उस साधु को अन्तिम बार पहाड की गुफा मे जाते देखा फिर वह कभी किसी को नजर नही आये। तब से यह जल आज तक बिना रूके से लगातार बहता रहता है।

इसीलिए इसे अमर कुण्ड का नाम दिया गया। जल के बहाव को सामान्य करने के लिए यहां गौ मुख (गाय का मुह) लगाया गया। इसी कारण से इसे गौ मुख भी कहते हैं। इस जल कि यह विशेषता है कि इसमे कभी भी कीडे नही पाये गये। जल को एकत्रित करने के लिए यहा पर एक कमरे के समान एक कुण्ड बना हुआ है। गौ मुख से निकलने वाला पानी इसी कुण्ड मे इक्ठा होता है। इसी के पास मे श्री राधाकृष्ण जी का प्राचीन मन्दिर भी स्थापित है। जिसमे श्री राधाकृष्ण जी की मूर्तियां है। लेकिन आज वहां केवल अकेली राधा जी की मूर्ति ही मौजुद हैं।

श्री राधाकृष्ण जी सामने ही एक शिवजी का मन्दिर था। जिसे कुछ उपद्रवी के लोगो द्वारा इसे तोड दिया था। इसे पुनः श्री देवकी जी पुरोहित के द्वारा यहां छोटा सा (शिवालय)शिव जी का मन्दिर बनवाया गया। जिसका मुख राधाकृष्ण जी की तरफ है। यही से पूर्व की दिशा मे पहाड की तरफ देखने पर वहां वह गुफा भी

नजर आ जाती है। जिसमे साधु को अन्तिम बार देखा गया। तथा यहां के पहाड़ पर तो प्रकृति भी महरबान है। क्यो कि इन पहाड में बरगद के वृक्षो ने आसरा ले रखा है। जिससे इन पहाड़ो कि शोभा देखते ही बनती है।

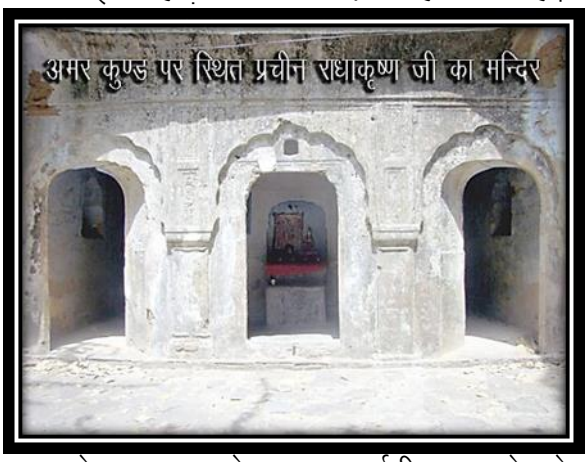

भोपाल गढ़ के प्रमुख दर्शनीय स्थलो के बाद किले की सुरक्षा को ध्यान में रख कर देखा जाये तो वह किले की बाहरी मजबुत दीवार है जिसके बारे में बताना अनिवार्य हो जाता है।

भोपाल गढ़ की सुरक्षा सीमा :

इस किले की सुरक्षा करने वाली यह भव्य व मजबुत दीवार जो सबसे महत्वपूर्ण हैं। जिसे भोपाल गढ़ की सुरक्षा सीमा कहा जाता है। इस दीवार की बनावट दीवार को ओर भी मजबुत बनाती है। इस दीवार के निवार्ण में चिकनी मिट्टी, पत्थर व चूना पत्थर को काम में लिया गया है। दीवार को पठारीनुमा आकार में बनाया गया जिसका नीचले भाग की तुलना में ऊपरी भाग कम चौड़ा है तथा ऊपरी भाग की चौडाई इतनी है कि जिस पर सैनिको का दल आसानी से आ जा सकें। इस दीवार के ऊपरी हिस्से पर 2 फीट चौड़ी दीवार ओर बनायी गई जिसमे बन्दुको के लिए 2 से 3 फीट की दूरी पर सांचे बनाये गये है। कुछ स्थानो पर तो सैनिको के लिए कक्ष (कमरे) व कारतुसो, गोला बारूद के लिए शास्त्रागृह, तोब के लिए विशेष स्थान बना हुआ है। तोप का स्थान तो आज भी वहां पर मौजूद है तथा जगह–जगह पर सीढ़ियां पायी गई जिनके जरिये सैनिक दीवार के ऊपरी हिस्से पर जा सकें। इस दीवार के मध्य में कुछ जगहो पर इस की मजबुती के लिए वृत्राकार स्तम्भ भी बनाये गए है। जिन्हे भोपाल किले के अन्दरोनी भाग से देखा जा सकता है। यह विशाल दीवार भोपाल गढ़ के समस्त महलो को अपने अन्दर समाहित कर उनकी सुरक्षा करती रहती है ओर आज भी कर रही है।

भोपाल गढ़ की निर्माण शैली :

अब बात आती है भोपाल गढ़ की शैली के बारे में जानने की तो इस बात के लिए राजस्थान का इतिहास नामक पुस्तक में यह प्रमाणिक है कि राजस्थान में मौर्यकाल लेकर के उत्रर गुप्तकालीन युग में स्थापत्य कला के रूप मे विशेष विकास हुआ । मध्यकालीन राजस्थान की स्थापत्य कला का विकास हुआ तथा उसी समय मे शुरू मे ही पहाड़ी नाको का तंग रखा गया था ऊची पहाड़ी पर राजभवनो का निर्माण कराया गया था। जयपुर नगर खुले मैदानी भाग मे बसाया गया था जिसके निर्माण में मुगल व राजपूत स्थापत्य शैलियो का समावेश किया गया तथा किलो व राजप्रसादो के निर्माण के दौरान मुगल सर्म्पक के कारण राजभवनो को अधिक बड़ा, सुज्जित व रोचक बनाया जाने लगा जिसमे जयपुर के दिवाने आम व दिवाने खास भी राजपूत–मुगल शैलियो का सम्मिश्रण पाया जाता है। जब सन् 1756 मे खेतड़ी को राजधानी बनाया गया था तब यह जयपुर रियासत मे शामिल होने पर महाराज भोपाल सिहं ने राजपूत–मुगल शैली को आधार बना महलो का निर्माण कराया गया। जिनमें राज दरबार, शीश महल आदि शामिल है।

अन्य महत्वपूर्ण बातें :

- भोपाल किले मे दो तोप थी जो किले दोनो भागो में स्थापित की गई थी । जिनमे से एक तोप प्रसिद्ध बेगम समरू की फौज की थी। सम्वत् 1824 में महाराज अभयसिंह जी के द्वारा भरतपुर व जयपुर का प्रसिद्ध युद्ध मावंडा स्थान पर हुआ। भोपाल सिंह ने जयपुर पक्ष मे तलवार उठायी थी। भरतपुर के जाटो से एक तोप छीन लाये थे। वही तोप प्रसिद्ध बेगम समरू थी। तथा दूसरी तोप जिसका नाम " बुढ़िया तोप " था। यह घटना महाराज अभयसिंह जी के बेटे राजा बाघसिंह जी के समय की थी सुना जाता है कि एक राजसिंह नामक घुडचढ़ा डाकू दुसाहस कर खेतड़ी की पर्वतमाला पार करके वहां तक पहुच गया था जहां पर बुढ़िया तोप रखी थी बाघसिंह जी ने उस दुवर्त्र को तुरन्त मार गिराया था। उस लडाई मे एक धामाई मारा गया उसकी याद मे किले से बाहर एक छतरी बनी हुई है। इस बुढ़िया तोप की वार करने की क्षमता बहुत तेज थी महाराज ने एक बार इसे युद्ध के समय चलाया गया तब इसका गोला सीधा सामोद की पहाड़ी मे जा पहुंचा जो आज भी वहां मौजूद है। इसी बुढ़िया तोप को राजा जी उत्सव के समय भी चलाते थे तब उसकी मात्र आवाज से ही गर्भवती महीलाओ के गर्भ गिर जाया करते थे इतनी तेज आवाज होती थी फिर खेतड़ी वासियो ने महाराज से यह निवेदन किया। तभी से बुढ़िया तोप को चलाना बन्द करवा दिया गया। लेकिन आज ये यहां पर मौजूद नही है।

- भोपाल किले मे दो विधुत जरनेटर थे जो महाराज अजीत सिंह जी के द्वारा आस्ट्रेलिया से मंगवाये गये थे। राजा जी ने विधुत जरनेटर खेतड़ी में बिजली की व्यवस्था के लिए लाये गए जिसमे से एक ही जरनेटर खोला गया व उसी के द्वारा सम्पूर्ण महल ओर गांव को बिजली दी गई। उस समय सभी ग्रामीण वासियो को एक होल्डर व एक बल्ब उपहार स्वरूप दिये गए थे। किन्तु दूसरे को कभी भी काम मे नही लिया गया। इसका क्या हुआ यह किसी को मालुम नही लेकिन माना जाता है कि खेतड़ी मे पहली बार बिजली तब ही आई थी इन्हे रखने के लिए बिजली घर राज महल के उत्तर दिशा मे ही बना था। जिसे जरनेटर हाउस के नाम से जानते है। जो आज भी वहां मौजूद है।

● भोपाल किले के इतिहास में इतने गुप्त रहस्य मौजूद है। जिनमे से कुछ ही बातो को आपके सामने प्रस्तुत कर सका। मै हर उस व्यक्ति से उम्मीद करता हूँ। कि इन सब के बारे मे जानने के बाद वह इस भोपालगढ़ को भी उतने सम्मान के साथ देखे व सभी को बताये जितना कि यहां के राजा अजीत सिंह जी को याद करते और सभी को उनके बारे मे बताते है। यह किला (गढ़) महाराजा भोपाल सिंह जी से लेकर राजा सरदार सिंह तक कि गाथा को अपने अन्दर समाये हुए हैं और आज तक उसी गौरव के साथ अपना मस्तक ऊँचा कर रखा हैं। यह है खेतड़ी का भोपाल गढ़.... जिसे देखकर हम सभी को गर्व महसूस होता हैं।

REFERENCES

- Sharma, Jhabharmal , Khetri ka Itihas
- Chouhan T.S. 2018. Geography of Rajasthan, Scientific Publication, Jodhpur
- Chauhan D.S. and Sharma, M.K. 2010. Settlement Geography of Khetri, Ritu Publication, Jaipur
- Author. (2010-2015).Field Visites